

स्पीच थेरेपी के लिए मार्गदर्शिका (हिंदी में)

Quality Care
You Can Trust



A Guide to Speech Therapy

Compiled By

Dr. Alok Arora, MSc (Clinical Psychology),
PhD, EPBM



www.jkphealthcare.com

ertyuiopasdfghjklzxcvbnmqwertyuio

A GUIDE TO SPEECH THERAPY

स्पीच थेरेपी के लिए मार्गदर्शिका

Table of Contents (अंतर्वस्तु)

1. स्पीच थेरेपी क्या है?	5
2. स्पीच थेरेपी की जरूरत क्यों है?	6
3. स्पीच थेरेपी कैसे की जाती है?	6
4. स्पीच डिऑर्डर या भाषाई विकार के खास लक्षण.....	7
5. स्पीच थेरेपी के फायदे	8
6. स्पीच चिकित्सक या स्पीच थेरेपिस्ट कौन है?	9
7. स्पीच थेरेपिस्ट क्या करते हैं?	9
7.1. धाराप्रवाहिता.....	10
7.2. बोली	10
7.3. भाषा	10
7.4. संज्ञान.....	10
7.5. आवाज.....	10
7.6. श्रवण स्थिरता और पुनर्वास	10
7.7. निगलने के विकार	10
7.8. अन्य सेवाएं.....	11
8. स्पीच थेरेपी कैसे काम करती है?	11
9. बच्चों के लिए स्पीच थेरेपी.....	11
9.1. लैंग्वेज इंटरवेंशन एक्टिविटीज़	12
9.2. आर्टिकुलेशन थेरेपी	12
9.3. फीडिंग एंड स्वालोइंग थेरेपी.....	12
10. वयस्कों के लिए स्पीच थेरेपी.....	12
10.1. कार्ड्स का प्रयोग.....	12
10.2. आईने का प्रयोग.....	13
10.3. जबड़े की कसरत	13
10.4. टंग ट्रिस्टर्स	13

11.	स्पीच थेरेपी के प्रकार क्या है?	13
11.1.	देर से बोलने वाले बच्चे के लिए चिकित्सा	13
11.2.	अप्रेक्सिया ग्रस्त बच्चे के लिए चिकित्सा.....	14
11.3.	हकलाने के लिए चिकित्सा.....	14
11.4.	स्वरहानि के लिए चिकित्सा.....	14
11.5.	निगलने में कठिनाई के लिए चिकित्सा.....	15
12.	स्पीच डिसऑर्डर के लक्षण	15
13.	स्पीच डिसऑर्डर के कारण	16
13.1.	बढ़ती उम्र	16
13.2.	बीमारियां/ विकार.....	16
13.3.	अन्य कारण.....	17
14.	स्पीच थेरेपी से लाभ	17
15.	क्या स्पीच थेरेपी सिर्फ बच्चों के लिए है ?	18
16.	स्पीच विकार क्या हैं?	18
	स्पीच विकार का क्या कारण होता है?	18
	आम स्पीच विकार	18
16.1.	हकलाना.....	18
16.2.	लिस्पिंग (उच्चारण में समस्या).....	18
16.3.	चेष्टा-अक्षमता – Apraxia	19
16.4.	डिस्थेरिया – Dysarthia	19
16.5.	बोली बंद होना – Aphasia.....	19
16.6.	आत्मकेन्द्रण – Autism.....	19
16.7.	आर्टिक्यूलेशन डिसऑर्डर.....	19
16.8.	प्रवाह संबंधी विकार.....	19
16.9.	अनुनाद या ध्वनि विकार.....	20
16.10.	संज्ञानात्मक-संचार विकार	20
16.11.	एक्सप्रेसिव विकार	20
16.12.	वाचाघात विकार.....	20
16.13.	ग्रहणशील विकार	20
17.	स्पीच थेरेपी उपचार.....	21
18.	स्पीच थेरेपी सत्र	21
19.	यदि आपके बच्चे को होती है बोलने में समस्या तो जरूर कराएं स्पीच थेरेपी.....	21

19.1.	बच्चों के लिए भाषण चिकित्सा.....	22
19.2.	घर पर बच्चे की स्पीच थेरेपी कैसे करें.....	22
19.3.	प्रारंभ में पेशेवर थैरेपिस्ट की तलाश करें.....	22
20.	भाषण विकारों के बारे में मिथक और तथ्य- Myths and Facts.....	23
	भाषा विकार से जुड़े मिथक – जानिए इनका वास्तविक सच.....	23
	भाषा विकार से जुड़े मिथक क्या है?	23
	भाषा विकार से जुड़े मिथक कैसे फैलते हैं?	24
	भाषा विकार से जुड़े मिथक क्यों प्रचलित हैं?.....	24
	भाषा विकार से जुड़े मिथक कौन से हैं?.....	24
	a). इस उम्र में बच्चों के साथ यह होता ही है?	25
	b). बच्चा जाँच-परिक्षण से गुजरने के लिए बहुत छोटा है?.....	25
	c). लड़कियों की तुलना में लड़के देरी से बोलते हैं?.....	25
	d). बच्चा बोल नहीं रहा है तो वह ज़िद्दी या आलसी हैं?.....	26
	e). बच्चे का स्कूल जाना शुरू करने तक इंतजार करना चाहिए?.....	26
	f). मानसिक रूप से मंद बच्चों में भाषण विकार सामान्य है?	26
	भाषा विकार से जुड़े मिथक कैसे रोकेँ?.....	27
	बच्चों की उम्र अनुसार भाषा विकास.....	27
21.	स्पीच थेरेपी से बोलने में लाभ.....	28
22.	निष्कर्ष व परिणाम	28

1. स्पीच थेरेपी क्या है?

स्पीच थेरेपी (वाक्-चिकित्सा) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बच्चे व वयस्क के बोलने में हो रही परेशानी को दूर करने के लिए किया जाता है। स्पीच थेरेपी के अंतर्गत बोलने में कठिनाई की समस्या से जूझ रहे व्यक्तियों या बच्चों को कई प्रकार की युक्तियों और तकनीकी चिकित्सा माध्यम से बोलने की क्षमता विकसित करने में लाभ मिलता है। और उनकी वर्तनी (भाषा) या बोलने की क्षमता में सुधार होता है।

इससे बोलने में उपयोगी मांसपेशिया की एक तरह से व्यायाम होता है। बोलने पर मुंह से ध्वनि निकलती है इस तरह बोलने का प्रयास करवाया जाता है। खासतौर पर कुछ ऐसे बच्चे होते हैं जो बोलने में हिचकिचाते हैं और कुछ बोल नहीं पाते हैं, ऐसे बच्चे को बोलने के तरीके के बारे में सिखाया जाता है। इसके अलावा सदमे लगने से कुछ वयस्क भी बोलने में असमर्थ हो जाते हैं, इनको थेरेपी का उपयोग कर बोलने व बात चित करने में मदद करते हैं। इन थेरेपी में मानसिक व शारीरिक रूप से बच्चों की परेशानियों व तंत्रिका संबंधित समस्या से छुटकारा दिलाया जाता है। हालांकि बच्चों के लिए पीडियाट्रिक स्पीच थेरेपिस्ट होते हैं एव बच्चे लोगो के लिए विशेष चिकित्सक व न्यूरोलिस्ट मिल कर काम कर सकते हैं।

स्पीच थेरेपी को हिंदी में भाषण चिकित्सा कहा जाता है। भाषण चिकित्सा संचार समस्याओं और भाषण विकारों का आकलन और उपचार है। स्पीच थेरेपी मौखिक संचार या स्पीच को प्रभावित करने वाले विकारों का इलाज करने का विज्ञान है। इसे स्पीच पैथोलॉजी भी कहा जाता है। स्पीच थेरेपी चिकित्सा विज्ञान की एक शाखा है। यह भाषण-भाषा रोगविदों (एसएलपी) द्वारा किया जाता है, जिन्हें अक्सर भाषण चिकित्सक के रूप में जाना जाता है। स्पीच चिकित्सक स्पीच और मुखर विकारों के इलाज में निपुण होते हैं। एक स्पीच थेरेपिस्ट उन लोगों का निदान और इलाज करता है जो सामान्य बातचीत नहीं कर सकते हैं। स्पीच थेरेपी में निगलने सम्बन्धी मामलों की कठिनाई को भी शामिल किया जाता है। संचार को बेहतर बनाने के लिए स्पीच थेरेपी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। इनमें भाषण या भाषा विकार के प्रकार के आधार पर आर्टिक्यूलेशन थेरेपी, भाषा हस्तक्षेप गतिविधियाँ और अन्य शामिल हैं। भाषण विकारों की आवश्यकता भाषण विकारों के लिए हो सकती है जो बचपन में विकसित होते हैं या वयस्कों में चोट या बीमारी, जैसे कि स्ट्रोक या मस्तिष्क की चोट के कारण होती है।

यह सुधार की प्रक्रिया या स्पीच थेरेपी कई सारे कारकों और तथ्यों पर निर्भर करती है, और हर किसी के लिए अलग होती है। इसके अंतर्गत आपकी बोलने के लिए उत्तरदायी मांसपेशियों को अभ्यास के द्वारा अधिक कुशल और मजबूत बनाया जाता है, और ध्वनि उत्पन्न करने की क्रिया को बेहतर बनाया जाता है जिसके लिए आपको कई प्रकार के खेल और कार्यों द्वारा अभ्यास करवाया जाता है, ताकि आप शब्दों को बोलने का सही तरीका सीखें और किसी भी शब्द का उच्चारण स्पष्ट रूप से कर सके। यह छोटे बच्चों से लेकर बड़ी उम्र के लोगो या वयस्क व्यक्तियों के लिए अलग-अलग तरह से रूप-रेखित (डिजाइन) किया जाता है।

2. स्पीच थेरेपी की जरूरत क्यों है?

स्पीच थेरेपी आपको बोलने में होने वाली परेशानी (स्पीच डिसऑर्डर) से निजात दिलाती है। यह स्पीच डिसऑर्डर की समस्या एक बिमारी है, जो की आपके शब्दों को बोलने की क्षमता को प्रभावित करती है। और आप दूसरे व्यक्ति या बच्चों की तरह अपने विचारों को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने में सक्षम नहीं होते है। और आपकी भावनाएं और विचार आपके अंदर घुट कर रह जाते है। इसमें स्पीच थेरेपी आपकी सहायता करती है।

यह आपको प्रभावी रूप से बोलने और सीखने में सक्षम बनाती है। जिससे की आप भी अन्य सामान्य व्यक्तियों या बच्चों की तरह ही धाराप्रवाह में बोल सकें, और अपने विचारों को शब्दों के माध्यम से व्यक्त कर सकें। इससे आपको कई अन्य लाभ भी मिलते है। जो की आपके व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास में सहयोग प्रदान करते है। जिससे की आपको किसी भी व्यक्ति से बात करते समय शर्मिंदा होना या अपनी कमजोरियों को छिपाना नहीं पड़ता है।

स्पीच थेरेपी का उपयोग कई प्रकार के कारणों और मदद के लिए किया जा सकता है। यह जरूरी नहीं कि जब आप किसी स्पीच डिसऑर्डर से ग्रस्त हो तभी आपको स्पीच थेरेपी की जरूरत हो सकती है। स्पीच डिसऑर्डर के अलावा भी कुछ लोगों को बोलने के साथ-साथ कुछ गड़बड़ी (जैसे, शब्दों का साफ न होना) हो सकती है। अपने वार्तालाप कि क्रिया को बेहतर बनाने के लिए भी स्पीच थेरेपी का उपयोग किया जाता है। स्पीच थेरेपी पर इन कारणों से काम कर सकते हैं जैसे,

- मुंह, जबड़े और गर्दन की मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए।
- स्पष्ट बोलने के लिए।
- चेहरे के सही हाव-भाव के साथ भावनाओं को मिलाने के लिए।
- बॉडी लैंग्वेज को समझाने के लिए।
- सवालों के जवाब ठीक से देने के लिए।
- किसी चित्र का उसके अर्थ से मिलान कराने के लिए।
- सही टोन का उपयोग करने के लिए।
- बोलने का तरीका सही करने के लिए।
- आवाज में उतार चढ़ाव लाने के लिए।

3. स्पीच थेरेपी कैसे की जाती है?

स्पीच थेरेपी दो तरह से की जाती है, जिसमे बच्चे और वयस्क दोनों शामिल है। जैसा की आपको पता है बच्चों के लिए पीडियाट्रिक विशेष चिकिस्तक व वयस्क के लिए स्पीच थेरेपिस्ट और साथ में विशेष चिकिस्तक होते है। बच्चों के लिए स्पीच थेरेपी करने के पहले उनकी भाषा पर जोर दिया जाता है की कौन सी भाषा है उसे बोलने व सीखने के लिए विभिन्न तरीके अपनाते है। स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट बच्चे की कमजोरियों को दूर करने में मदद कर सहयोग देते है ताकि बच्चा अपनी परेशानी भूलकर बोल सके। इसके अलावा बच्चे को लुभाने के लिए मनोरंजन के तौर पर सिखाते है, इस तरह बच्चे मजे लेकर व खेल खेल में आसानी से बोलन सीख सके।

वयस्कों में स्पीच थेरेपी की बात करे तो यह बच्चों से थोड़ा अलग होता है। स्पीच थेरेपी में मनुष्य की परेशानियों के बारे में जानने का प्रयास करते है। इसके अलावा व्यक्ति बोलने में परेशान हो रहा है तो उसकी परेशानी के पूछते है की आखिर क्या बात है और क्या कोई हादसा है जो परेशानी का कारण बन रहा है। कुछ मामलों में चिकिस्तक व्यक्ति को फोटो दिखाकर परेशानी जानने की कोशिश करते है। आपकी भाषा से जुडी सवालो के बारे में पूछते है। यदि व्यक्ति ठीक से भोजन नहीं खा रहा है तो पुरानी बीमारी इतिहास के बारे में पूछते है। मुँह व गले की मांसपेसियों की जांच करते है ताकि यह पता कर सके इनमे कोई समस्या तो नहीं। इन समस्या को ठीक करने के लिए चिकिस्तक आपके जीवनशैली में बदलाव कर सकते है। जिसमे व्यायाम और पौष्टिक भोजन, उठने बैठने का तरीका, बात करने का तरीका आदि करने की सलाह दे सकते है।

4. स्पीच डिसॉर्डर या भाषाई विकार के खास लक्षण

यदि किसी बच्चे में एक तय उम्र के बाद भी यह लक्षण दिखाई दे तो ऐसे बच्चे को स्पीच थेरेपी की जरूरत हो सकती है। स्पीच थेरेपी साधारण बोल-चाल में होने वाली कठिनाई का इलाज करने का एक कारगर तरीका है और इसके जरिए भाषाई विकार में सुधार लाया जा सकता है □

स्पीच विकार से पीड़ित लोगों द्वारा दिखाए गए कुछ लक्षण नीचे दिए गए हैं।

- ध्वनि दोहराव (अक्सर उन लोगों में देखा जाता है जो हकलाते है)
- तुतलाना और शब्दों को साफ न बोल पाना
- अतिरिक्त ध्वनियां और शब्द जोड़ना
- शब्दों का विस्तारीकरण
- बात करते समय झटका देना (आमतौर पर सिर को शामिल करना)
- बात करते समय कई बार झपकी
- संवाद करने की कोशिश करते समय दृश्यमान निराशा
- बात करते समय लगातार विराम लेना
- बात करते समय आवाज विकृत करना
- घोरपन (या बजरी आवाज)
- कम सुनाई देने की वहज से भाषाई समस्याएं होना
- दूसरे की बात को समझने के बावजूद बोल कर ठीक से प्रतिक्रिया दे पाने में अक्षम होना
- अन्य कारण जैसे किसी बीमारी/संक्रमण के चलते आवाज का भारी होना, गला हमेशा बैठा रहना, आवाज की नली का कैंसर या उसका चोटिल/खराब होना आदि।

5. स्पीच थेरेपी के फायदे

स्पीच थेरेपी बच्चों के लिए बहुत लाभदायक होता है। इस थेरेपी से बच्चे को ठीक से बोलने व लिखने में मदद मिलता है। इसके अलावा कमजोर बच्चों के अंदर एक तरह का भरोसा आता है की वह भी बाकि बच्चों की तरह बोल सकते है। कुछ ऐसे बच्चे भी होते है जो ठीक से पढ़ नहीं पाते है उनके लिए यह थेरेपी बहुत उपयोगी होता है। इसमें बच्चों सामाजिक व शारीरिक तौर पर तैयार करते है की वो सबके साथ किस तरह रह सकते है।

बहुत से बच्चे पढ़ने में अच्छे नहीं होते है लेकिन कला में बहुत ही अच्छे होते है ऐसे बच्चों को मनोरंजन की सहायता से पढ़ने में रूचि लगवाया जाता है। ताकि आगे चलकर पढ़ाई में सफल हो सके।

स्पीच थेरेपी का सबसे अधिक फायदा छोटे बच्चों को होता है, जो बहुत जल्दी सिख जाते है बोलने व लिखने, पढ़ने की प्रकिया को आदि। कुछ शोध में बतलाया गया है बच्चों में 70 फीसदी की परेशानी को स्पीच थेरेपी की सहायता से ठीक करने में मदद करते है। इस थेरेपी के माध्यम से बहुत से बच्चों के बोलने व भाषा में सुधार हो जाता है।

स्पीच डिऑर्डर या भाषाई विकार लोगों में निराशा या मायूसी की वजह बन सकता है, वे अकेलेपन के शिकार हो सकते है। यह उनके सामाजिक जीवन और पढ़ने-लिखने की काबिलियत पर भी बुरा असर कर सकता है इसलिए जरूरी है कि भाषाई विकार से ग्रस्त लोगों को सहयोग और उनकी मदद की जाए।

आइए जाने स्पीच थेरेपी से होने वाले फायदों के बारे में :

- स्पीच थेरेपी ठीक से बोलचाल करने के काबिल बनाती है और ज्यादा साफ और शुद्ध रूप से बोलने में मदद करती है।
- स्पीच थेरेपी भाषा की जानकारी को बढ़ाने में भी मददगार होती है जो पढ़ने-लिखने की काबिलियत बढ़ाने कारगर है जिससे चीजों के बारे में सोचना-समझना आसान हो जाता है।
- स्पीच थेरेपी के जरिए बातचीत या प्रतिक्रिया देने के दूसरे तरीकों के बारे में जानकारी मिलती है।
- स्पीच थेरेपी से सुनने की क्षमता बढ़ती है जिससे अक्षरों को समझना, उनको बोलने में फर्क करना आसान हो जाता है।
- जरूरत होने पर यदि शुरुआत से ही बच्चों को स्पीच थेरेपी दी जाए तो यह उनके भाषाई कौशल को काफी बेहतर कर सकती है।

स्पीच थेरेपी की मदद लेते समय इन बातों पर गौर किया जाना भी जरूरी है :

- स्पीच थेरेपी, भाषाई विकार के इलाज का बेहतर तरीका है लेकिन इसका फायदे मिलने में समय लग सकता है।
- यदि स्पीच थेरेपिस्ट या विशेषज्ञ को बच्चों के साथ काम करने का तर्जुबा हो तो छोटे बच्चों को इस थेरेपी से बेहतर नतीजे मिल सकते हैं।
- माता-पिता के सहयोग करने, बच्चे को घर पर बोलने का अभ्यास कराना स्पीच थेरेपी से जल्द फायदा दिलाने में मददगार हो सकता है।

6. स्पीच चिकित्सक या स्पीच थेरेपिस्ट कौन है?

स्पीच चिकित्सक या स्पीच थेरेपिस्ट एक पैरामेडिकल पेशेवर है। उसे एक स्पीच रोग और भाषा रोग विज्ञानी के रूप में भी जाना जाता है। वे स्पीच और भाषा विकार से संबंधित सभी मामलों में काम करते हैं।

स्पीच थेरेपी द्वारा ठीक की गई कुछ समस्याएं नीचे दी गई हैं।

- मौखिक संचार विकार (Verbal Communication Disorders)
- स्पीच और भाषाओं का विकास (Development Of Speech And Languages)
- आवाज संबंधित मुद्दे (Voice Related Issues)
- मरीजों को निगलने में मरीज़ (Patients Having Swallowing Difficulties)
- सीखना और बौद्धिक अक्षमता (learning and intellectual disability)
- जन्म के बाद देरी स्पीच विकास (Delayed Speech Development After Birth)
- मस्तिष्क की चोटों या स्ट्रोक के कारण स्पीच विकार (Speech Disorders Due To Brain Injuries Or Strokes)
- सेरेब्रल पाल्सी के कारण स्पीच विकास (Speech Development Due To Cerebral Palsy)
- डिमेंशिया के कारण स्पीच संबंधित मुद्दे (Speech Related Issues Due To Dementia)
- वृद्धावस्था के कारण श्रवण हानि (Hearing Impairment Due To Old Age)

7. स्पीच थेरेपिस्ट क्या करते है?

स्पीच थेरेपिस्ट को स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट या एसएलपी (SLP) भी कहते है। स्पीच थेरेपिस्ट आपकी परेशानी का मूल्यांकन आपके बोलने, भाषा समझने (सुनने), याद रखने और भोजन ग्रहण करने सम्बन्धी परेशानियों की जांच द्वारा करते है, और यह निर्धारित करते है की आपको किस स्तर की बोलने में कठिनाई की समस्या है। और उससे निजात दिलाने के लिए आपके अनुसार इलाज का चुनाव करते है।

इसके अंतर्गत स्पीच थेरेपिस्ट द्वारा निम्न सहायता की जाती है :

7.1. धाराप्रवाहिता

आपका हकलाना (सट्टरिंग) या बोलते समय अटकने की परेशानी, और बोलते समय शब्द भूल जाना (क्लटरिंग) की समस्या का निदान किया जाता है। जिससे आप भी धाराप्रवाह में बोल सकें।

7.2. बोली

इसमें आपके द्वारा बोले गए शब्दों की स्पष्टता पर ध्यान दिया जाता है, और अभ्यास के माध्यम से आपको शब्दों का स्पष्ट उच्चारण (अर्टिकुलेशन) करना सिखाया जाता है।

7.3. भाषा

इसके अंतर्गत आपके द्वारा बोली जाने वाली और लिखित भाषा की क्षमता और समझ को विकसित किया जाता है। जिससे की आप शब्दों को समझने लिखने और बोलने में सक्षम हो सकें।

7.4. संज्ञान

यह आपके ध्यान, स्मृति, समस्याओं को हल करने की क्षमता से जुड़ा हुआ है। जिसमें आपको अपने दिमाग द्वारा शब्दों या अन्य बातों को याद रखने और जानकारी एकत्रित करने और परशानियों का हल निकालने में सक्षम किया जाता है।

7.5. आवाज

इसमें आपके द्वारा बोलने की क्षमता को विकसित किया जाता है। जिससे की आप मौखिक रूप से शब्द या वाक्यों को जरूरत के अनुसार सही स्तर (तेज या धीमे स्वर में) पर बोल सकें। क्योंकि अलग-अलग शब्दों को बोलने में लगने वाली शक्ति भी अलग होती है।

7.6. श्रवण स्थिरता और पुनर्वास

इसके अंतर्गत आपकी बोलने की क्षमता, सुनने की क्षमता, और भाषा संबंधी सभी विकारों को चिकित्सा तकनीक के माध्यम से पुनर्स्थापित (सुधार) किया जाता है।

7.7. निगलने के विकार

इसमें आपके द्वारा निगलने में कठिनाई की समस्या का इलाज किया जाता है। यह समस्या अस्थायी (कुछ समय के लिए) या जन्मजात (जन्म के समय से) भी हो सकती है। जिससे आपको कुछ भी निगलने और बात करने में परेशानी होती है।

7.8. अन्य सेवाएं

कुछ स्पीच थेरेपिस्ट कई प्रकार की अन्य सेवाएं भी आपको प्रदान कर सकते हैं जिनमें मुख्य रूप से –

- विशिष्ट रूप से आवाज को विकसित करना
- उच्चारण और बोली सम्बन्धी सहायता
- दो अलग प्रकार (स्त्री व पुरुष) की आवाज निकलना
- अलग-अलग परिवेश में (व्यवसाय में, बाजार में) बोलचाल के तरीके
- आवाज की स्पष्टता या शुद्धता में आपकी सहायता करना

8. स्पीच थेरेपी कैसे काम करती है?

स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट या एसएलपी (SLP) कई प्रकार से अलग-अलग उम्र वर्ग के बच्चों और वयस्कों का इलाज करता है। इसके लिए वह किसी व्यक्ति की उम्र को देखता है। क्योंकि यह सभी तकनीक व्यक्ति-विशिष्ट होती है, और सभी के लिए अलग तरीके से काम करती है। इसके आधार पर यह निम्नलिखित होती है –

9. बच्चों के लिए स्पीच थेरेपी

जब एक शिशु बोलना शुरू करता है या बोलना सीखता है, तो इस प्रक्रिया में कई पड़ाव आते हैं। अपनी उम्र के हिसाब से सभी शिशु धीरे-धीरे अक्षर, शब्द और वाक्य बोलना सीखते हैं। उम्र बढ़ने के साथ ही उनका भाषा ज्ञान भी बढ़ता है और उनकी बोलचाल साफ और शुद्ध होने लगती है जो कि एक साधारण प्रक्रिया है। लेकिन कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जिनकी उम्र बढ़ने के साथ भाषाई विकास और अक्षर/शब्द ज्ञान तो बढ़ता है पर उन्हें कुछ खास अक्षरों को बोलने में कठिनाई होती है और वे उन अक्षरों से बने शब्दों का उच्चारण ठीक नहीं से नहीं कर पाते।

ऐसे में जब बच्चा ठीक से नहीं बोल पाता तो माता-पिता को लगता है कि उम्र बढ़ने के साथ बच्चे की यह समस्या दूर हो जाएगी पर स्पीच डिऑर्डर की वजह से हमेशा ऐसा नहीं होता। अगर इसका इलाज न किया जाए तो कई केस में यह परेशानी उम्र बढ़ने के बाद भी बनी रहती है।

अलग-अलग उम्र के बच्चों के लिए सबसे पहले एसएलपी (SLP) जांच द्वारा यह निर्धारित करता है, की समस्या का प्रकार और स्तर क्या है? फिर वह समस्या के निवारण से जुड़े तरीकों में से बच्चे के आधार पर विशेष तरीको का चयन करता है। जो की समस्या को बेहतर प्रकार से हल कर सकें। इसके लिए वह ऐसे प्रयोगों और खेलों का सहारा लेता है जो की बच्चों को बहुत मजेदार थोड़े चुनौतीपूर्ण और आनंददायक लगे। जिससे की बच्चा इसमें पूरी तरह से हिस्सा लें और प्रक्रिया के सभी चरणों को पूरा करे।

स्पीच थेरेपी से जुड़े ऐसे ही कुछ उपचार निम्न है :

9.1. लैंग्वेज इंटरवेंशन एक्टिविटीज़

लैंग्वेज इंटरवेंशन या भाषा में हस्तक्षेप तीन बातों पर निर्भर करती है – शब्दों का ज्ञान, बोलने का कौशल, और सुनने की क्षमता यह कई तरीकों से बच्चों की भाषा को विकसित करती है। जिसमें बच्चे के सही या गलत बोलने पर उन्हें जरूरी प्रतिक्रिया दी जाती है। साथ ही चिकित्सक फोटो और बुक या खेल के माध्यम से भी भाषा को सीखने का प्रोत्साहन दे सकते हैं।

9.2. आर्टिकुलेशन थेरेपी

अभिव्यक्ति चिकित्सा या आर्टिकुलेशन थेरेपी द्वारा स्पीच-लैंग्वेज पैथोलोजिस्ट बच्चों को उन शब्दों और ध्वनियों को बोलने का अभ्यास बार-बार करवाते हैं जिन ध्वनियों को बोलने में बच्चे को सबसे ज्यादा परेशानी होती है। इसके लिए वह मॉडल तैयार कर सकते हैं। और किसी आवाज को कैसे निकालना है? और उस समय जीभ कैसे हिलती है? यह सभी क्रियाएं बच्चों को करके दिखाते हैं।

9.3. फीडिंग एंड स्वालोइंग थेरेपी

खाने और निगलने की चिकित्सा द्वारा चिकित्सक बच्चों को भोजन चबाते समय और निगलते समय होने वाली जरूरी क्रियाओं को मजेदार तरीके से समझते हैं। और ऐसे अभ्यास करवाते हैं जिनसे मुँह की मांसपेशियों को मजबूत किया जा सके। जिससे बच्चे खाने और निगलने के समय सजगता से काम लें। और भोजन के आधार पर उन्हें खाने के नियम बताते हैं।

10. वयस्कों के लिए स्पीच थेरेपी

वयस्कों को सही उपचार प्रदान करने के लिए स्पीच थेरेपिस्ट कई तरह से उनकी समस्या का निर्धारण करने की कोशिश करते हैं। जिसके अंतर्गत वह आपसे कई तरह के सवालों द्वारा आपकी परेशानी की असली वजह जानने की कोशिश करते हैं।

इससे यह जानने में सहायता मिलती है, की वजह क्या है? और क्या यह गंभीर है? अथवा सामान्य रूप से किसी मानसिक समस्या से जुड़ी है जैसे – निराशा, अवसाद आदि इसके अंतर्गत वह सभी तरह से कमजोरियों की जाँच करते हैं। किसी अन्य कारण की भी जाँच की जाती है। इसके बाद स्पीच थेरेपिस्ट आपके व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर इलाज करते हैं। जैसे की –

10.1. कार्ड्स का प्रयोग

इसमें चिकित्सक आपको भिन्न-भिन्न कार्ड्स दिखाकर चीजों को सीखने और एक सही क्रम में याद रखने का अभ्यास करवाता है। साथ ही समस्याओं को हल करना भी सिखाता है।

10.2. आईने का प्रयोग

यदि आप बोलते समय शब्द ही भूल जाते हो या आपको बोलने में शर्म, झिझक होती हो। तो आपको एक आईने के सामने उन सभी वाक्यों और शब्दों को दोहराने और बार-बार बोलने की सलाह दी जाती है जिससे की आप उन सभी कमजोरियों को दूर कर आत्मविश्वास प्राप्त कर सकें।

10.3. जबड़े की कसरत

इसके अंतर्गत कुछ शब्दों को उच्चारण करते हुए आपको परेशानी होने पर उसको दूर करने के लिए उनके उच्चारण को बेहतर बनाया जाता है। और इसमें जबड़े की कसरत का प्रयोग किया जाता है। जिससे की आप जबड़े को सही प्रकार से खोलने व हिलाने तथा सही उच्चारण करने में सक्षम हो सकें।

10.4. टंग ट्विस्टर्स

यह एक खेल है जो मजेदार होता है इसमें एक सही क्रम में शब्दों और वाक्यों को आपके द्वारा बहुत तेजी से बोलने का अभ्यास करवाया जाता है। इसमें आपको जुबान फिसलने का कारण बनने वाले ऐसे वाक्य बोलने को दिए जाते हैं जो की आसानी से नहीं बोले जा सकते हैं। जैसे की – ऊँट ऊँचा तो ऊँट की पीठ ऊँची, पीठ ऊँची तो ऊँट ऊँचा। एक बार आप भी आजमा कर देखिये।

11. स्पीच थेरेपी के प्रकार क्या है?

स्पीच थेरेपी कई प्रकार से होती है। यह व्यक्ति और बच्चों के लिए भी अलग होती है, जिससे की हर उम्र का हर व्यक्ति स्पीच थेरेपी से लाभ प्राप्त कर सके। और बोलने, सुनने, समझने सम्बन्धी सभी विकारों से निजात पा सके, साथ ही अपने आत्मविश्वास को फिर से बढ़ा सके। जिससे की उसे शिक्षा, व्यवसाय, और सामाजिक क्षेत्र में उचित सम्मान और लाभ प्राप्त हो सके।

इसके अंतर्गत आने वाली कुछ प्रमुख चिकित्सा पद्धतियां निम्न है –

11.1. देर से बोलने वाले बच्चे के लिए चिकित्सा

ऐसे बच्चे या नवजात शिशु जो की सामान्य से अधिक समय बाद बोलन शुरू करते हैं, या फिर बोलने में सक्षम नहीं होते हैं। उनके लिए भी स्पीच थेरेपी बहुत सहायक होती है। इसमें चिकित्सक आपके बच्चे को हर संभव प्रयास द्वारा बोलने के लिए उत्साहित करता है जिससे की वह बोलने की कोशिश करे।

चिकित्सक आपके बच्चे से दोस्ती करता है। उसे उसकी पसंद की चीजों को दिखाकर उत्साहित करता है, जिससे की बच्चा उन्हें पाने के लिए बोले, या फिर उन्हें बहुत सी तस्वीर और चित्र दिखाकर बोलने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। साथ ही वह आपके बच्चे की सुनने की क्षमता का परिक्षण भी कर सकता है।

11.2. अप्रेक्सिया ग्रस्त बच्चे के लिए चिकित्सा

अप्रेक्सिया (Apraxia) की बीमारी दिमाग से जुड़ी समस्या है और इससे ग्रस्त बच्चे कुछ प्रकार के शब्दों और ध्वनियों के उच्चारण में कठिनाई महसूस करते हैं। उन्हें शब्दों का सही ज्ञान होने पर भी उन्हें बोलते समय गलतियां होती हैं। ऐसे बच्चों के इलाज के लिए चिकित्सक या स्पीच थेरेपिस्ट कुछ जरूरी जांच करता है, जिससे की समस्या का सही रूप से मूल्यांकन किया जा सके।

यदि आपका बच्चा अप्रेक्सिया (Apraxia) की समस्या से ठीक भी हो जाये तब भी उसे स्पीच थेरेपी की आवश्यकता पड़ती ही है। जिसके अंतर्गत चिकित्सक आपके बच्चे को शब्दों के उच्चारण और उनकी ध्वनियों को समझने के लिए उन्हें देखकर या छू कर समझने में सहयोग करता है। इसके अतिरिक्त आपके बच्चे को बोलते समय आईने में खुद को देखकर, या बोले गए शब्दों को रिकार्ड कर के वापस सुनने से मदद मिलती है। ऐसे अभ्यास बच्चे के विकास में सहायक होते हैं।

11.3. हकलाने के लिए चिकित्सा

हकलाने की समस्या एक प्रकार का विकार है, जो की ज्यादातर बचपन से ही दिखाई देने लगता है। पर कभी-कभी किसी मानसिक आघात के कारण व्यस्क व्यक्तियों में भी हकलाने के समस्या उत्पन्न हो सकती है। किसी भी उम्र वर्ग के व्यक्ति को जो इस समस्या से पीड़ित है स्पीच थेरेपी की आवश्यकता होती है।

इसके अंतर्गत चिकित्सक आपके बच्चे या किसी व्यक्ति को उसके व्यवहार सम्बन्धी कुछ अभ्यास देकर इस समस्या का उपचार करने की कोशिश करता है। इसके लिए वह आपसे बोलते समय तीव्रता के स्थान पर धीरे-धीरे बोलने को कह सकता है, क्योंकि गति से बोलने पर बीच में अटकने और हकलाने की समस्या उत्पन्न होती है। पर धीरे, सही उच्चारण से, धाराप्रवाह में बोलना, अधिक फायदेमंद रहता है। अपनी श्वास पर नियंत्रण भी लाभ पहुँचता है।

11.4. स्वरहानि के लिए चिकित्सा

अफेजिया (aphasia) स्वरहानी या बोलते समय शब्दों का लोप हो जाना अथवा भूल जाना एक दिमागी विकार है। इससे ग्रस्त बच्चा बोलते हुए ही अचानक शब्दों को भूलकर स्तब्ध हो जाता है। इसमें बच्चे को पढ़ने, सुनने, और लिखने में भी समस्या होती है। यह समस्या व्यस्क व्यक्तियों में भी हो सकती है, पर इसका कारण किसी प्रकार का मानसिक आघात होता है।

इस समस्या में स्पीच थेरेपिस्ट आपकी सहायता कर सकता है। वह आपको दूसरे के द्वारा बोले गए शब्दों को समझने, अपने विचार सही प्रकार से जाहिर करने, और निगलने सम्बन्धी समस्याओं का उपचार करता है। जिसके अंतर्गत आपको समूह में लोगों से बात करने, भाषा सम्बन्धी कुशलता विकसित करने, और लिखकर चीजों को याद रखने सम्बन्धी अभ्यास करवाता है।

11.5. निगलने में कठिनाई के लिए चिकित्सा

कभी-कभी किसी कारणवश आपका बच्चा भोजन निगलने सम्बन्धी विकार से ग्रस्त हो सकता है। इसमें भी स्पीच थेरेपिस्ट आपके बच्चे की सहायता कर सकता है। चिकित्सक आपके बच्चे को अभ्यास द्वारा जबड़े और मुँह की मांसपेशियों को मजबूत बनाने में सहयोग कर सकता है। जिससे की उसे चबाने और जीभ की गतिविधियों द्वारा भोजन को बेहतर तरीके से निगलने में मदद मिलती है।

इसके लिए भोजन निगलते समय सांस लेने सम्बन्धी नियमों के बारे में भी बच्चे को सिखाया जाता है। यह बोलने सम्बन्धी विकारों को नियंत्रित करते है। यह सभी ऐसे कुछ मुख्य प्रकार थे, जो की स्पीच थेरेपिस्ट या वाक-चिकित्सक द्वारा समस्या के निवारण के लिए इस्तेमाल किये जाते है। पर ऐसे तरीकों की बहुतायत है, जो की अलग-अलग चिकित्सक द्वारा अलग रूप में प्रयोग किये जाते है। यह चिकित्सक की रोग-निर्धारण कुशलता पर निर्भर करता है।

12. स्पीच डिसऑर्डर के लक्षण

स्पीच डिसऑर्डर वाणी विकार या बोलने में समस्या होना, कई कारकों का मिलाजुला रूप है। जिसके अंतर्गत किसी शब्द को बोलने में ध्वनि उत्पन्न करते समय परेशानी होती है। इसके पीछे कुछ दिमागी विकारों जैसे अफेजिया, अप्रेक्सिया, डिस्लेक्सिया आदि के साथ हकलाना, तुतलाना, आटिज्म, एडीएचडी विकार, तथा शब्दों का ज्ञान न होना, निगलने में समस्या आदि आते है। इससे ग्रस्त बच्चा या व्यक्ति शब्दों के ठीक प्रकार से उच्चारण करने या अपने विचारों को भाषा के माध्यम से व्यक्त करने में असमर्थ होता है। ऐसे में स्पीच थेरेपी से सहायता मिलती है।

यदि बच्चे में इस प्रकार के लक्षण दिखाई दें तो वह स्पीच डिसऑर्डर से ग्रस्त हो सकता है –

- दूसरों की बात समझने में कठिनाई
- बातचीत में प्रतिक्रिया देने में समस्या
- बात करते समय अचानक रुक जाना
- बोलते-बोलते शब्दों को भूल जाना
- झटके के साथ बोलना और रुक जाना
- गला बैठना या गले का संक्रमण
- आवाज भारी होना या बिगड़ना
- कोशिश करना पर बोल न पाना
- एक ही शब्द या वाक्य बार-बार बोलना
- बोलते समय बार-बार पलक झपकना
- शब्दों को खींचना या लम्बा बोलना
- लोगों से बात करने में घबराना
- बात करते समय निराशा, चिंता, या डर
- हकलाना या बोलते समय अटकना
- तुतलाना या लिस्पिंग की समस्या
- सुनने में समस्या होना

“इन सभी लक्षणों में से यदि कुछ लक्षण आपको खुद में या अपने बच्चे में दिखाई देते हैं तो स्पीच थेरेपी आपकी सहायता कर सकती है”

13. स्पीच डिसऑर्डर के कारण

बोलने सम्बन्धी विकारों या अक्षमता के पीछे कई प्रकार के करक हो सकते हैं जो की आपको अपने विचार तथा भावनाएँ बोलकर दूसरों को समझाने में असमर्थ बनाता हैं। साथ ही बातचीत के दौरान दूसरों की बात पर जरूरी प्रतिक्रिया देने में आपको परेशानी महसूस होती है। इस समस्या के अंतर्गत आने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित हैं –

13.1. बढ़ती उम्र

कभी कभी उम्र बढ़ने के साथ व्यक्ति बोलने में दिक्कतों का सामना करने लगते हैं। जिसका कारण उम्र बढ़ने के साथ दिमाग की सक्रियता में कमी भी हो सकती है। या फिर किसी दुर्घटना या मानसिक आघात की वजह से भी यह समस्या हो सकती है। जिसमें ज्यादातर व्यक्ति शब्दों को भूलने, अटकने, उच्चरण की स्पष्टता में कमी और हकलाने जैसी समस्या से जूझते हैं। ऐसे में स्पीच थेरेपी से आपको काफी सहायता मिल सकती है, यह सभी उम्र वर्ग के लोगों के लिए काम करती है।

13.2. बीमारियां/ विकार

कभी कभी कुछ बीमारियां / विकार भी बोलने में समस्या का कारण बनती हैं। इसमें मुख्य रूप से दिमाग के तंत्रिका तंत्र से जुड़ी समस्याएं शामिल होती हैं, जैसे –

- ऑटिज्म (Autism)
- स्ट्रोक या आघात
- गले का कैंसर
- लारेंजियल कैंसर
- हनटिंग्टन रोग
- डिमेंशिया (मनोभ्रम)
- लकवा (पक्षघात)
- आनुवंशिक कारण
- अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर (ADHD)

13.3. अन्य कारण

- बहुत अधिक बोलने से
- स्वरतंत्र में विकार से
- टॉन्सिल की सूजन से
- गलसुआ रोग के कारण
- जीभ में सूजन होने से
- चिपकी जीभ के कारण
- मुँह में छाले होने से

14. स्पीच थेरेपी से लाभ

स्पीच डिसऑर्डर (वाणी विकार) की समस्या होने पर या अन्य समस्याओं में बोलने से सम्बंधित अन्य समस्याओं में भी स्पीच थेरेपी या वाक्-चिकित्सा से काफी लाभ मिलता है।

- साफ बोलने की क्षमता बढ़ना
- आत्मविश्वास का आना
- धाराप्रवाह में बोलना
- बोलते समय परेशानी न होना
- बोलते समय डर, चिंता, भय समाप्त होना
- निराशा, और मायूसी समाप्त होना
- शिक्षा में सुधार होना
- सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ना
- भावनात्मक रूप से मजबूत होना
- ध्वनियों को पहचानने में सक्षम होना
- लिखने और पढ़ने में सुधार होना
- उत्साह में वृद्धि होना
- मानसिक स्तर में सुधार होना
- शब्दों के उच्चारण में कुशलता
- बातचीत में सक्षम होना
- भाषा की जानकारी बढ़ना
- सोचने और समझने में आसानी
- तर्क शक्ति बढ़ना
- सुनने की शक्ति में सुधार
- शब्दों के बीच फर्क समझना

15. क्या स्पीच थेरेपी सिर्फ बच्चों के लिए है ?

स्पीच थेरेपी बच्चों के साथ-साथ वयस्कों के लिए फायदेमंद है। कई मामलों में, वयस्कों को एक स्पीच थेरेपिस्ट की मदद की ज़रूरत होती है। दुर्घटनाएं या पक्षाघात स्ट्रोक वयस्कों में स्पीच में कमी का कारण बनता है। एक पक्षाघात स्ट्रोक से पीड़ित एक रोगी अपनी मांसपेशियों का उपयोग करने में एवं भोजन निगलने में असमर्थ होता है। स्पीच थेरेपी मांसपेशियों को मजबूत करने में मदद करता है। इसलिए वे किसी की मदद के बिना भोजन और पेय ले सकते हैं।

16. स्पीच विकार क्या हैं?

स्पीच विकार ज्यादातर स्पष्ट शब्दों को बनाने में असमर्थता से संबंधित होते हैं। हकलाना या स्टैमरिंग (स्टटरिंग) (stammering or stuttering) और लिस्पिंग (lisp) सबसे आम स्पीच विकार हैं।

स्पीच विकार का क्या कारण होता है?

- वोकल कार्ड्स को नुकसान या पक्षाघात।
- दुर्घटना या स्ट्रोक के कारण मस्तिष्क को नुकसान।
- मांसपेशी और श्वसन कमजोरी
- वोकल कार्ड्स पर पॉलीप्स (polyps) या नोड्यूल (nodules)

उपर्युक्त कुछ सामान्य कारण हैं। स्पीच विकार चिकित्सा परिस्थितियों के साथ विकसित होते हैं जो सीधे उपरोक्त हिस्सों को प्रभावित नहीं करते हैं।

आम स्पीच विकार

16.1. हकलाना

हकलाने को आम तौर पर स्टैमरिंग या स्टटरिंग के रूप में जाना जाता है। हकलाना सभी स्पीच विकारों में सबसे आम है। बचपन के दौरान हकलाना बहुत आम है। जब लोग बड़े हो जाते हैं तो अधिकांश लोग स्पष्ट रूप से बोलते हैं। बच्चे जो हकलाना जारी रखते हैं उन्हें स्पीच थेरेपी की आवश्यकता होती है।

16.2. लिस्पिंग (उच्चारण में समस्या)

लिस्पिंग बच्चों में आम बोलचाल की एक और स्थिति है। बच्चे जो ऊष्म व्यंजनों उच्चारण नहीं कर सकते हैं। ऊष्म व्यंजन “S”, “Z”, “Sh” और “Zh” जैसे धनियां हैं। स्पीच थेरेपी ज्यादातर मामलों में लिस्पिंग को ठीक कर सकती है। स्पीच थेरेपिस्ट बच्चे को शब्दों को

सही तरीके से उच्चारण करना सिखाता है। स्पीच थेरेपी में स्पीच की मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए अभ्यास भी शामिल है।

16.3. चेष्टा-अक्षमता - Apraxia

एक स्पीच विकार जब मस्तिष्क से तंत्रिका के मांसपेशियों में खराबी का हिस्सा होता है। नसें स्पीच की मांसपेशियों के लिए निर्देश वाहक का काम करती हैं। इस मामले में, निर्देश स्पीच की मांसपेशियों तक नहीं पहुंचते हैं। व्यक्ति शब्दों के बारे में सोचता है लेकिन बात नहीं कर सकता। होंठ, जीभ और जबड़े को स्थानांतरित करने के लिए निर्देश प्राप्त नहीं किए जाते हैं। हालांकि खुद की मांसपेशियां स्वस्थ हैं।

16.4. डिस्थेरिया - Dysarthria

एक स्पीच विकार जिसमें रोगी मुंह और चेहरे की मांसपेशियों की जुम्बिस करने में असमर्थ होता है। समस्या की गंभीरता प्रभावित तंत्रिका तंत्र के हिस्से पर निर्भर करती है। व्यक्ति मानसिक रूप से शब्दों को बना सकता है लेकिन संवाद करने में असमर्थ है। चूंकि मांसपेशियां बोलने में व्यक्ति के प्रयास में समर्थन नहीं करती हैं। इस मामले में, तंत्रिका या मांसपेशियों को नुकसान होता है।

16.5. बोली बंद होना - Aphasia

यह स्पीच विकार चेष्टा-अक्षमता और डिस्थेरिया से अलग है। इस मामले में, भाषाई तौर पर ज़िम्मेदार मस्तिष्क के क्षेत्र में नुकसान होता है। यह आम तौर पर एक पक्षाघात होने के बाद वयस्कों के साथ होता है। यह मस्तिष्क ट्यूमर के कारण भी हो सकता है।

16.6. आत्मकेन्द्रण - Autism

आत्मकेन्द्रण या ऑटिज़्म को स्पीच विकार के रूप में नहीं माना जाता है। ऑटिज़्म के साथ बच्चों को स्पीच विकार हैं उसमें स्पीच थेरेपी मददगार है। एक स्पीच विकार ऑटिज़्म के शुरुआती संकेतों में से एक है।

16.7. आर्टिक्यूलेशन डिसऑर्डर

आर्टिक्यूलेशन विकार के कारण पीड़ित कुछ शब्द ध्वनियों को ठीक से बनाने में असमर्थ होते हैं। इसमें शब्दों का गलत उच्चारण होता है जिससे सुनने वाला समझ नहीं पा रहे हैं कि आप कहना क्या चाह रहे हैं।

16.8. प्रवाह संबंधी विकार

इस विकार में हकलाने जैसी समस्याएं शामिल हैं, जिसमें असामान्य ठहराव, शब्दों का दोहराव, शब्दों में अटकना आपके बात करने के स्टाइल को खराब कर देता है।

16.9. अनुनाद या ध्वनि विकार

अनुनाद विकार तब होता है जब नाक या मौखिक गुहाओं में नियमित रूप से वायु प्रवाह की रुकावट या आवाज की गुणवत्ता के कंपन को बदल देती है। ये आवाज की पिच, मात्रा या गुणवत्ता के साथ समस्या के कारण होती है। इस प्रकार के विकार बच्चे के लिए दर्द या परेशानी का कारण हो सकते हैं।

16.10. संज्ञानात्मक-संचार विकार

संज्ञानात्मक संचार विकार वो है जिसमें मस्तिष्क के उस हिस्से पर चोट लगने के कारण संचार करने में कठिनाई होती है जो आपके सोचने की क्षमता को नियंत्रित करता है, जिसे संज्ञानात्मक-संचार विकार कहा जाता है। इसका परिणाम मेमोरी इश्यू, प्रॉब्लम सॉल्विंग और बोलने में दिक्कत या सुनने में दिक्कत हो सकती है। यह कई समस्याओं जैसे, असामान्य मस्तिष्क विकास, कुछ न्यूरोलॉजिकल स्थितियों, मस्तिष्क की चोट या स्ट्रोक के कारण हो सकता है।

16.11. एक्सप्रेसिव विकार

इस विकार में बच्चे अपने अंदर की बातें किसी के सामने पूरी तरह से एक्सप्रेस करके उसे समझा नहीं पाते हैं। स्पीच थेरेपी इसमें बच्चों की बहुत मदद कर सकती है।

16.12. वाचाघात विकार

यह एक संचार विकार है जो किसी व्यक्ति की दूसरों के सामने बोलने और समझने की क्षमता को प्रभावित करता है। यह अक्सर किसी व्यक्ति की पढ़ने और लिखने की क्षमता को भी प्रभावित करता है। स्ट्रोक वातस्फीति का सबसे आम कारण है, हालांकि मस्तिष्क के अन्य विकार भी इसका कारण बन सकते हैं।

16.13. ग्रहणशील विकार

यह तब हो सकता है जब आप किसी को बोल रहे हैं, और वो आपकी बात पर कोई भाव नहीं प्रकट कर रहा है। ग्रहणशील भाषा विकार वाले व्यक्ति को दूसरों की कही बात को समझने में परेशानी होती है।

निम्नलिखित कुछ और स्थितियां हैं जो स्पीच विकारों के लिए ज़िम्मेदार हैं

- ध्यान अभाव अति सक्रियता विकार (एडीएचडी – ADHD)
- मौखिक या लारेंजियल कैंसर
- मनोभ्रंश -Dementia
- अनुवांशिक

17. स्पीच थेरेपी उपचार

स्पीच थेरेपी उपचार विकार के प्रकार और गंभीरता पर निर्भर करता है। कभी-कभी हल्के विकार स्वयं का ख्याल रखते हैं। यदि विकार दूर नहीं होता है, तो सलाह दी जाती है कि इलाज शुरू करें और उपचार शुरू करें।

18. स्पीच थेरेपी सत्र

स्पीच थेरेपिस्ट उचित निदान के बाद इलाज के दौरान निर्णय लेता है। स्पीच थेरेपी नियमित अभ्यास सत्र होते हैं। व्यायाम बोलने के लिए इस्तेमाल मांसपेशियों को मजबूत करने में मदद करते हैं। सांस नियंत्रण और मांसपेशी मजबूती अभ्यास विकार को दूर करने में मदद करते हैं। थेरेपी सामान्य और धाराप्रवाह स्पीच में परिणाम देती है।

19. यदि आपके बच्चे को होती है बोलने में समस्या तो जरूर कराएं स्पीच थेरेपी

स्पीच थेरेपी के नाम से ही इसके अर्थ का अनुभव आपको हो ही गया होगा। यह एक ऐसी थेरेपी है जिसमें बच्चों के बोलने में आने वाली कठिनाई को दूर करके उन्हें बोलने में मदद की जाती है। इसका सबसे अधिक उपयोग बच्चों में किया जाता है। बच्चों के लिए स्पीच थेरेपी का उपयोग अलग-अलग कारणों से किया जा सकता है। स्पीच थेरेपी यानि भाषण चिकित्सा भाषा और संचार के साथ चुनौतियों का सामना करती है। यह ऑटिज्म वाले बच्चों को अपने मौखिक, अशाब्दिक और सामाजिक संचार में सुधार करने में मदद कर सकता है। इस थेरेपी का लक्ष्य व्यक्ति को सही तरीके से संवाद यानि बात करने में मदद करना है।

इस इलाज में कई तरह की चुनौतियां भी होती है। कई बार ऑटिज्म या अन्य विकार से पीड़ित लोगों के कारण अलग-अलग होते हैं, जिससे उन लोगों को इस थेरेपी की आवश्यकता पड़ती हैं। ऑटिज्म स्पेक्ट्रम पर कुछ व्यक्ति बोलने में सक्षम नहीं हैं। तो वहीं दूसरों को बात करना पसंद है, लेकिन उन लोगों को बातचीत करने में कठिनाई होती है या दूसरों के साथ बात करते समय शरीर की भाषा और चेहरे के भाव समझने में कठिनाई होती है। ऑटिज्म एक विकासात्मक विकलांगता है जो आमतौर पर 3 साल की उम्र से पहले दिखाई देती है। ऑटिज्म न्यूरोलॉजिकल विकारों के एक समूह का हिस्सा है जिसमें बात करने में समस्या पैदा होती है। बच्चों में स्पीच थेरेपी प्रोग्राम शुरू करने से पहले एक स्पीच-लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट द्वारा मूल्यांकन करने के बाद शुरू किया जाता है।

स्पीच थेरेपी के दौरान क्या होता है?

भाषण चिकित्सा यानि स्पीच थेरेपी आमतौर पर एक एसएलपी द्वारा निदान के साथ शुरू होती है जो संचार विकार के प्रकार और इसके इलाज में मदद करता है।

19.1. बच्चों के लिए भाषण चिकित्सा

बच्चों में स्पीच थेरेपी का उपयोग करने से पहले यह जानना आवश्यक होता है, की आपके बच्चे को बोलने में समस्या किस कारण से ही रही है। बच्चों के भाषण विकार के आधार पर, स्पीच थेरेपी तय कि जाती है। स्पीच थेरेपी और बाकी गतिविधियां आपके बच्चे के विकार, उम्र और जरूरतों के आधार पर भिन्न होती हैं। बच्चों के लिए भाषण चिकित्सा के दौरान, एसएलपी हो सकता है।

- बच्चों की स्पीच थेरेपी में बातचीत और खेल के माध्यम से उन्हें बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- बच्चों की स्पीच थेरेपी में बच्चों से बात करने के लिए उन्हें आसानी से अपनी बात समझाने के लिए चित्रों का उपयोग भी किया जाता है।
- बच्चों में स्पीच थेरेपी के दौरान उनकी पसंद के खेल द्वारा भी थेरेपी की जाती है। उनके साथ ऐसे खेल खेलने से वो आपके साथ इनवॉल्व होने लगते हैं।
- स्पीच की प्रैक्टिस कराई जाती है।
- बच्चों के साथ उनके हिसाब से फन करते हुए भी उनकी थेरेपी सेशन ली जाती है।
- शब्दों का सही उच्चारण कराया जाता है।

19.2. घर पर बच्चे की स्पीच थेरेपी कैसे करें

ऐसे कई तरीके हैं, जिनकी मदद से आप घर पर ही अपने बच्चे की स्पीच थेरेपी करवा सकते हैं। आइए जानते हैं, घर पर बच्चे की स्पीच थेरेपी कैसे कि जा सकती है।

- सबसे पहले तो अपने बच्चे के साथ अधिक से अधिक समय बिताएं।
- उससे उसके जैसे छोटे बनकर ही बात करें, जैसे की वो आपके दोस्त हैं।
- कोई मजेदार गेम खेलें।
- यदि आप उसे कुछ समझाना चाहते हैं, तो उसे गेम के माध्यम से समझाने की कोशिश करें।
- ऐसे बच्चों पर चिल्लाएं नहीं।
- उनके साथ उनकी पसंद का खेल खेलकर उन्हें बोलने की प्रैक्टिस करवा सकते हैं।
- हर छोटे बड़े काम के लिए उन्हें बुलाएं और उनसे बात करें।
- बच्चों को अकेला न छोड़ें।
- घर पर बच्चों के लिए स्पीच थेरेपी करते समय उन्हें बाकी बच्चों से मिलाने ले जाएं। जिससे वो आपस में बात करने की आदत डालें।
- उनके साथ उनकी तरह डांस करें।
- गाना गाएं।
- जिससे वो आपकी बात सुनकर आपसे खुलकर आपसे बात कर सकें।
- जब वो अपने स्पेशल क्लास से आए तो जानबूझ कर उनसे दिन भर की बाते पूछें। जहां वो बोलने में समस्या महसूस कर रहे हो, वहां उनकी मदद करें।

19.3. प्रारंभ में पेशेवर थैरेपिस्ट की तलाश करें

माता-पिता और अभिभावकों को पेशेवर रूप से योग्य स्पीच थैरेपिस्ट से सलाह लेनी चाहिए। उचित स्पीच थेरेपी की देरी या अनुपस्थिति बच्चे में कई व्यक्तित्व विकारों के साथ

बढ़ती है। चिंता, भय, शर्मनाकता और घबराहट जैसे मुद्दे भी संभव हैं। स्पीच विकार की शर्मिंदगी के कारण वे एक अकेलेपन में रह जाते हैं।

माता-पिता और अभिभावक अपने क्षेत्र में एक स्पीच थेरेपिस्ट का पता लगा सकते हैं। किसी भी सहायता के लिए कृपया हमसे संपर्क करें।

20. भाषण विकारों के बारे में मिथक और तथ्य– Myths and Facts

स्पीच विकारों से जुड़े कई मिथक हैं। घरेलू उपचार और अवैज्ञानिक सलाह न करें। मिथकों और असली तथ्यों के बारे में पढ़ें। हमेशा एक योग्य ऑडियोलॉजिस्ट और स्पीच भाषा थेरेपिस्ट से संपर्क करें।

भाषा विकार से जुड़े मिथक – जानिए इनका वास्तविक सच

भाषा विकार या बोलने में समस्या एक बहुत ही गंभीर रोग है। यह किसी भी उम्र के लोगो को अपना चपेट में ले सकती है। पर ज्यादातर यह शिशु के जन्म से ही या शुरूआती कुछ वर्षों में दिखना शुरू हो सकता है। अक्सर लोग जानकारी की कमी के चलते भाषा विकार से जुड़े मिथक या इनके सम्बन्ध में प्रचलित गलतफहमियों का शिकार हो जाते है, और खुद भी इन्हे फैलाने का काम करते है।

तो चलिए अब इस विषय पर अधिक जानकारी प्राप्त करते है और जानते है की भाषा विकार से जुड़े मिथक क्या है? और यह प्रचलित क्यों है? साथ ही जानिए की इन्हे फैलाने से कैसे रोका जाये?

भाषा विकार से जुड़े मिथक क्या है?

भाषा विकार के मिथक जानने से पहले आपको यह जानना होगा की आखिर भाषा विकार क्या है? स्पीच डिसऑर्डर अथवा बोलने में समस्या बहुत ही जटिल रोग है। जो सामान्यतः दवाओं के प्रयोग से ठीक नहीं होता है। इसे दूर करने के लिए निरंतर अभ्यास की जरूरत होती है। **स्पीच थेरेपी** ही इसका एकमात्र सफल उपाय है। यह **बोलने में कठिनाई** की समस्या को दूर करने में पीड़ित व्यक्ति की सहायता करती है।

बोलने में समस्या या स्पीच डिसऑर्डर निम्नलिखित प्रकार के होते है –

- लिस्पिंग (उच्चारण में समस्या)
- हकलाना या तुतलाना
- मौखिक अप्रेक्सिया
- अफेजिया (बोली बंद होना)
- डिसरथ्रिया (बोलने में कठिनाई)
- ऑटिज्म (स्वलीनता)
- एडीएचडी (ध्यान आभाव अतिसक्रियता विकार)
- डिमेंशिया (दिमागी विकार)

भाषा विकार से जुड़े मिथक ऐसी गलत अवधारणाएं (गलतफहमियां) हैं जो बिना किसी आधार के ही समाज में प्रचलित हैं। जब कोई बच्चा जन्म लेता है, तो अक्सर लोग बच्चे के माता-पिता को इन सुनी सुनाई बातों या भ्रांतियों के बारे में बताते हैं। इनमें से क्या सच है? और क्या झूठ? यह तो समय आने पर ही पता चलता है। पर आप निराश न हों क्योंकि हम आपको इन सभी तथ्यों की वास्तविक सच्चाई बताने जा रहे हैं।

भाषा विकार से जुड़े मिथक कैसे फैलते हैं?

भाषा विकार से जुड़े मिथक फैलने के पीछे वैसे तो बहुत सी वजहें हो सकती हैं। पर इन सभी में सबसे बड़ी और खतरनाक वजह है जानकारी की कमी, जी हाँ। अक्सर लोग इन गलतफहमियों के पीछे की वास्तविक सच्चाई को जानने की कोशिश ही नहीं करते हैं। और जो कुछ भी तथ्य किसी व्यक्ति के द्वारा सुनते हैं उसे ही सच मान लेते हैं। यही वजह है की ऐसी गलतफहमियां समाज में पनपती रहती हैं।

अक्सर इन गलत तथ्यों या मिथकों को फैलाने वाले ऐसे लोग होते हैं, जिनपर हम भरोसा करते हैं। जैसे आपके कोई करीबी रिश्तेदार या परिवार के अन्य सदस्य भी यह काम कर सकते हैं। हालाँकि इसमें उन लोगों की गलती नहीं होती है। क्योंकि वह लोग तो बस आपसे जानकारी साझा करने की कोशिश करते हैं। पर कोई भी जानकारी बिना सच जाने दूसरों को बताना ही इनके फैलने का मुख्य कारण है।

भाषा विकार से जुड़े मिथक क्यों प्रचलित हैं?

भाषा विकार से जुड़े मिथक प्रचलित होने का सबसे आम कारण है वास्तविक सच का पता न होना। चूँकि यह जानकारी आपके करीबी लोगों द्वारा प्रदान की जाती है। इसलिए अक्सर लोग इनकी जाँच-पड़ताल नहीं करते और इन्हें सही मान लेते हैं। क्योंकि इन्हें फैलाने वाले व्यक्ति भी अनजाने में ही ऐसा करते हैं। वह ये सोचकर ही जानकारी आपको प्रदान करते हैं की इसमें आपकी भलाई होगी, पर ऐसा होता नहीं है।

इनके प्रचलित होने की एक अन्य वजह यह भी है की लोग ऐसी बातों से डरते हैं। क्योंकि यह तथ्य उनके दिमाग में जगह बना लेते हैं। और इन तथ्यों से सम्बंधित कोई घटना होने पर वह उसे रोकने के लिए यह जानकारी दूसरों को प्रदान करते हैं। कभी-कभी आधी अधूरी जानकारी को पूरा करने और इसे रोचक बनाने के लिए भी लोग अपनी तरफ से कुछ अतिरिक्त तथ्य इनमें जोड़ देते हैं जो की पूरी तरह मिथक होता है।

भाषा विकार से जुड़े मिथक कौन से हैं?

अब आप यह तो जान ही गए होंगे की भाषा विकार क्या है और इस से जुड़े मिथक क्यों समाज का हिस्सा बन गए हैं? तो चलिए अब आपको बताते हैं की बोलने में समस्या से जुड़े यह तथ्य कौन से हैं? साथ ही यह भी जानेंगे की इनमें क्या मिथक है और क्या वास्तविक सच?

यह सभी प्रचलित तथ्य और उनकी सच्चाई निम्नलिखित है :

a). इस उम्र में बच्चों के साथ यह होता ही है?

मिथक : अक्सर माता-पिता यह सोचते हैं कि बहुत से बच्चे हकलाते या तुतलाते हैं। अथवा बच्चा शब्दों का उच्चारण ठीक से नहीं करता है, तो यह सामान्य है। इसलिए आम धारणा यह है कि यह समस्या उम्र बढ़ने के साथ अपने आप दूर होती जाएगी।

सच्चाई : हालाँकि ऐसा नहीं है कि यह नहीं हो सकता है। कई बच्चे हकलाना बंद कर सकते हैं, और उसकी भाषा भी स्पष्ट हो जाती है। लेकिन समय के भरोसे बैठने की जगह किसी चिकित्सक से परामर्श करना उचित है। क्योंकि यदि विकार स्थायी है तो चिकित्सा व अभ्यास शुरू करने में देर नहीं होनी चाहिए। क्योंकि भाषा विकास में देरी होने से बच्चे के पढ़ने और लिखने की योग्यता पर भी विपरीत असर होगा जो बच्चे के सम्पूर्ण विकास और भविष्य को प्रभावित करेगा।

b). बच्चा जाँच-परीक्षण से गुजरने के लिए बहुत छोटा है?

मिथक : अक्सर बहुत से माता-पिता यह सोचते हैं कि उनका बच्चा अभी बहुत छोटा है इसलिए उन्हें किसी चिकित्सीय जाँच-परीक्षण के लिए भेजना जल्दबाजी होगी। और उन्हें बच्चे के थोड़े बड़े होने या सही उम्र का इन्तजार करना चाहिए।

सच्चाई : हालाँकि ये मान्यताएं बिलकुल अवैज्ञानिक और गलत हैं। क्योंकि बहुत से अस्पतालों में बच्चों में श्रवण हानि और जन्मजात बहरापन रोकने के लिए श्रवण हानि परीक्षण किये जाते हैं। जबकि वे बच्चे सिर्फ कुछ दिन के होते हैं। इसलिए भाषा विकार की जाँच में देरी नहीं करनी चाहिए। यह स्पीच थेरेपिस्ट नवजात शिशुओं की जाँच के लिए प्रशिक्षित होते हैं। वह बच्चों में भाषा विकारों की जाँच करते हैं और बच्चे को उचित चिकित्सीय देखभाल और टीकाकरण द्वारा लाभ प्रदान करते हैं।

c). लड़कियों की तुलना में लड़के देरी से बोलते हैं?

मिथक : अक्सर लोग यह मानते हैं कि लड़कियों की तुलना में लड़के बहुत बाद में शब्दों को बोलना शुरू करते हैं, भले भी वह सामान्य उम्र के हों।

सच्चाई : हालाँकि आप मानो या न मानो, पर यह एक सच है। यह एक बहुचर्चित तथ्य है कि लड़कियां लड़कों के बोलना शुरू करने से पहले ही बोलने लगती हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि बोलने का परीक्षण करने में देरी करनी चाहिए। हालांकि, एक तथ्य यह भी है कि चूंकि लड़कियां पहले परिपक्व होती हैं। इसलिए वे लड़कों की तुलना में तेजी से अन्य कौशल भी हासिल करती हैं।

परन्तु यदि माता-पिता को यह लगता है कि उनके लड़के के बोलना शुरू करने में कुछ देरी हो रही है। तो उन्हें समान उम्र के लड़कों से तुलना करनी चाहिए। ऐसे दूसरे लड़कों के बोलने के कौशल की तुलना करने पर जिन्होंने बोलना शुरू किया है, बच्चे के माता पिता को मदद मिलेगी। जिसके आधार पर यह स्पष्ट हो जायेगा कि यह सामान्य है या बच्चा वास्तव में इस समस्या से ग्रस्त है।

d). बच्चा बोल नहीं रहा है तो वह जिद्दी या आलसी है?

मिथक : कई बार बच्चों के माता-पिता का यह मानना होता है कि बच्चे के भाषा कौशल के विकास में देरी इसलिए होती है क्योंकि बच्चा जिद्दी या आलसी है और इसलिए वह ज्यादा बात नहीं करता है।

सच्चाई : यह बहुत सामान्य सी बात है कि कोई बच्चा अपनी उम्र के समूह के अन्य बच्चों की भाषा स्पष्ट होने के बाद भी अपनी बच्चे जैसी बोली में बोलना जारी रखता है। इसलिए माता-पिता को लगता है कि उनका बच्चा जिद्दी या आलसी है। यदि बच्चा शब्द का गलत उच्चारण करते हैं। तो यह बच्चे जिद्दी या आलसी नहीं है। बल्कि संभावना यह है कि बच्चे को चिकित्सकीय रूप से “स्वर संबंधी विकार” हो सकता है इसकी पुष्टि के लिए बच्चे को ध्यान से देखें या चिकित्सक से परामर्श करें।

e). बच्चे का स्कूल जाना शुरू करने तक इंतजार करना चाहिए?

मिथक : कभी कभी कुछ माता-पिता वाक् चिकित्सक के पास जाने में देरी करते हैं। और यह उम्मीद करते हैं, कि जब उनका बच्चा स्कूल में शामिल हो जायेगा तो उसके बाद बोलना शुरू कर देगा।

सच्चाई : ऐसे माता-पिता को जल्दी से जल्दी चिकित्सक या स्पीच थेरेपिस्ट से परामर्श करना चाहिए। क्योंकि ऐसे बच्चों की स्पीच थेरेपी शुरू करने में देरी होने से यह बच्चे के भविष्य को प्रभावित कर सकती है। यदि बच्चे में वाक् विकार या स्पीच डिसऑर्डर है, तो बच्चे को स्पीच थेरेपी की गतिविधियों में देरी से शामिल होने पर पढ़ने और लिखने की क्षमता विकसित करने में भी देरी होगी।

और यह देरी बच्चे की शिक्षा और अच्छे रोजगार प्राप्त करने की संभावना को भी विपरीत रूप से प्रभावित करेगा। क्योंकि स्पीच थेरेपी के अंतर्गत भाषा कौशल विकसित करने के अभ्यास शुरू करने में जितनी अधिक देरी होगी, बच्चे को भी वापस सामान्य स्थिति में लाने में चिकित्सक को उतना ही अधिक समय भी लगेगा।

f). मानसिक रूप से मंद बच्चों में भाषण विकार सामान्य है?

मिथक : यह एक बेहद आम धारणा है कि मानसिक रूप से मंद बच्चों में वाणी विकार भी होता ही है। हालाँकि यह सबसे अधिक प्रचलित धारणा है जो की पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है।

सच्चाई : यह धरना बिलकुल ही गलत है यह जरूरी नहीं की मंदबुद्धि बालक भाषा बोल नहीं सकते है। और तो और अगर बच्चे को अन्य समस्याएं भी हैं, तो भी यह आवश्यक नहीं है कि यह समस्याएं उनकी भाषा को भी प्रभावित करेगी। क्योंकि यह एक ज्ञात तथ्य है कि कम बुद्धि वाले बच्चों में असाधारण संवाद शक्ति और विदेशी भाषा बोलने तक के कौशल होते हैं।

यह स्थिति चिकित्सकीय सन्दर्भ में “चैटबॉक्स सिंड्रोम” के रूप में जानी जाती है। और ऐसे बच्चे को खुद को व्यक्त करने के लिए स्पीच लैंग्वेज पैथोलोजिस्ट द्वारा बहुत अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया जा सकता है। भले ही वे मानसिक रूप से मंद होते हैं फिर भी वह बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

भाषा विकार से जुड़े मिथक कैसे रोकेँ?

इस प्रकार के मिथकों को रोकने के लिए यह बेहद जरूरी है की आप तुरंत इन पर भरोसा न करें। अपनी समझ-बूझ से काम लें और इन सभी प्रचलित तथ्यों का एक ही बार में समर्थन न करें। साथ ही इन्हें किसी अन्य व्यक्ति को बताने से पहले इनकी सत्यता की जाँच अवश्य कर लें। जिससे सिर्फ सही जानकारी लोगों तक पहुंचे। और कोई गलतफहमी लोगों और उनके मासूम बच्चों को अपना शिकार न बनाये।

किसी तथ्य की सत्यता की जांच करने का सबसे अच्छा तरीका है की आप किसी विशेषज्ञ अथवा स्पीच थेरेपिस्ट से इस तथ्य की चर्चा करें। क्योंकि एक पेशेवर चिकित्सक ही सही तथ्यों को आपके सामने लाकर गलतफहमियों को दूर कर सकता है। क्योंकि यह बेहद जरूरी है की समाज में फैली इन भ्रांतियों को दूर किया जाये। जिससे बच्चों को कोई भाषा विकार होने पर उचित समय पर उनका इलाज किया जा सके।

बच्चों की उम्र अनुसार भाषा विकास

बच्चे अपनी उम्र के एक सामान्य चरण पर पहुँच कर बोलचाल के कुछ विशेष व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। हमारे द्वारा प्रदर्शित तथ्य बच्चों के अनुमानित भाषा विकास के चरणों को व्यक्त करते हैं। और आपको यह जानने में मदद करते हैं की बच्चा सही क्रम में अपनी भाषा का विकास कर रहा है या नहीं? इससे माता-पिता को यह सुनिश्चित करने में भी मदद मिलेगी कि बच्चे को किसी चिकित्सीय जाँच की आवश्यकता है या नहीं?

उम्र अनुसार भाषा विकास के तथ्य निम्नलिखित हैं –

- जन्म के समय : बच्चे का रोना आम है इसमें मैटरनिटी हॉस्पिटल के डॉक्टर आवश्यक जांच करेंगे और प्रीनेटल हियरिंग चेक पर जोर देते हैं।
- 2 से 3 महीने : इसमें बच्चे का रोना अलग होता है, और बच्चा माता-पिता की बात के जवाब में कुछ मनभावन आवाज भी निकालता है।
- 3 से 4 महीने : बच्चा लगातार बोलने की कोशिश करता है। जिससे लगता है, कि वह अपने आप से बात कर रहे हैं।
- 5 से 6 महीने : ऐसे बच्चों की आवाज़ थोड़ी लयबद्ध हो जाती है। और वे शब्दों को बोलने की कोशिश करते हैं।
- 6 से 10 महीने : इस उम्र के बच्चे प्रश्नों के उत्तर में कुछ प्रतिक्रिया भी करते हैं। जैसे कि उत्तर देते समय चेहरे के भाव प्रदर्शित करते हैं।
- 11 से 12 महीने : इस उम्र में बच्चे शब्दों में “मा”, “पा” जैसे नामों को पहचानना शुरू करता है। कुछ शब्दों को दोहराते भी है।
- 13 से 18 महीने : इस उम्र में बच्चा लगभग 25 शब्दों का उपयोग करता है। और अधिक नाम सीखता है, साथ ही कुछ सरल निर्देशों का पालन भी करता है।

यह जरूरी है की माता-पिता को प्रचलित मिथकों और मान्यताओं से अधिक किसी पेशेवर चिकित्सक पर भरोसा करना चाहिए। पुराने समय में प्रचलित घरेलू उपचार भले ही पूरी तरह से गलत न भी हों। लेकिन चिकित्सा विज्ञान विकास का एक लंबा सफर तय कर चुका है। और नई तकनीकें और स्पीच थेरेपी तकनीक बेहतर हैं और बच्चे को जल्दी सामान्य बनाने में मदद करती हैं।

21. स्पीच थेरेपी से बोलने में लाभ

सभी माता-पिता आमतौर पर अपने बच्चों के प्रति सुरक्षात्मक होते हैं। और सामाज में अपने बच्चों की बदनामी होने से बचाने के कारण किसी भाषा चिकित्सक का सहयोग लेने का फैसला नहीं कर पाते हैं। हालाँकि अब इंटरनेट के आने और डॉक्टरों के ऑनलाइन परामर्श देने जैसी सुविधाओं ने यह संभव कर दिया है कि माता पिता को बच्चों के लिए स्पीच थेरेपी क्लिनिक में आए बिना आराम से घर पर ही चिकित्सा और सुविधाएँ प्रदान की जा सकती है।

स्पीच थेरेपी द्वारा बच्चों को बोलने में कठिनाई, शब्दों के उच्चारण में समस्या, बोली बंद होना, मौखिक अप्रेक्सिया, ध्यान अभाव अतिसक्रियता विकार, ऑटिज्म, हकलाना और तुतलाना जैसी कई प्रकार की भाषा सम्बन्धी समस्याओं में लाभ प्रदान किया जा सकता है। इसके लिए चिकित्सक बच्चे की सम्पूर्ण जाँच करके, चिकित्सा की उचित पद्धतियों का इस्तेमाल करता है। जिससे बच्चा अन्य बच्चों की तरह ही सामान्य रूप से बोलने, पढ़ने, और लिखने में सक्षम हो जाता है।

22. निष्कर्ष व परिणाम

पूरी दुनिया भर के सभी समुदायों की अपनी-अपनी मान्यताएं होती हैं। यह मान्यताएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक निरंतर कई वर्षों से चली आ रही हैं। हालाँकि यह कुछ समाजों में बहुत अधिक प्रचलित है। जहां कुछ विषयों पर स्वतंत्र रूप से चर्चा नहीं की जा सकती है, और जहाँ शिक्षा का स्तर भी कम है। ऐसे में इन बच्चों में भाषण संबंधी विकार होना आम है। क्योंकि यहाँ माँ से बेटी को इन तथ्यों लिए सुझाव दिए जाते हैं।

जिनमें कुछ तो वैज्ञानिक रूप से सिद्ध होते हैं। लेकिन कुछ तथ्य सिर्फ गलतफहमी ही पैदा करते हैं। और यह बच्चे के स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक हैं। इसलिए माता-पिता को जागरूक बनना चाहिए जिससे वे लक्षणों का जल्दी पता लगा सकें। और सही समय पर स्पीच थेरेपिस्ट से परामर्श कर सकें जिससे बच्चों के लिए स्पीच थेरेपी जल्दी शुरू हो सकें।

किसी भी प्रकार की सहायता के लिए अथवा हमारे ट्रेड स्पीच थैरेपिस्ट से निशुल्क ऑनलाइन मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए हमें संपर्क करें:

JKP Healthcare

Call or whatsapp +91 7021954379

Call or whatsapp +91 9321504127

Email: contact.jkphealthcare@gmail.com

www.jkphealthcare.com

Delhi Mumbai Pune Goa Jaipur Nagpur Bangalore Chennai

References:

1. www.earguru.in
2. www.lhmc-hosp.gov.in
3. www.parentune.com/parent-blog/benefits-of-speech-therapy-for-babies
4. helloswasthya.com/parenting/child-health/other-child-health-issues/speech-therapy-for-babies
5. www.hearingsol.com
6. www.indianautismsociety.org
7. www.jkphealthcare.com